गाँधी 150वीं के परिप्रेक्ष्य में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी
दिनांक : 23-24, जनवरी, 2020
गाँधी और भारतीय भाषाएँ

संगोष्ठी की अवधारणा

सन् 1857 की राज्य क्रांति यद्यपि प्रत्यक्ष रुप से विफल रही तथापि भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास में परोक्ष रूप से उसने महत्वपूर्ण योग दिया। इस विफलता के पश्चात् भारतीय जनता को पहली बार यह अनुभव हुआ कि देश को एक सूत्र में बांधे बिना स्वतंत्रता प्राप्ति का भगीरथ-कार्य संपन्न नहीं हो सकता। परिणामस्वरुप जब देश में जागृति उत्पन्न हुई और राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोने के प्रयास समस्त भारत में प्रारंभ हुए, तब जनता के कर्णधारों ने अनुभव किया कि इस संगठन के लिए एक भाषा की बड़ी आवश्यकता है। अत: बंगाल,पंजाब, गुजरात तथा दक्षिण भारत के लोगों ने हिंदी को इस कार्य के लिए चुनने का प्रयास किया। हिंदी के लिए वास्तव में वह गौरव का दिन था, जब उसका नाम अहिंदी भाषियों द्वारा प्रस्तावित किया गया था।

राष्ट्रभाषा का इतिहास जानने के जिज्ञासुओं के मन में यह प्रश्न सहज ही उत्पन्न हो सकता है कि उस समय अहिंदी भाषी नेताओं ने राष्ट्रभाषा के लिए स्व-भाषाओं के नाम प्रस्तावित न करके 'हिंदी' का नाम क्यों प्रस्तावित किया? यह निर्विवाद है कि भारत की सभी भाषाएँ अपने-अपने स्थान पर महत्वपूर्ण, संपन्न तथा समृद्ध हैं; पर व्याप्ति की दृष्टि से हिंदी सर्वाधिक व्याप्त भाषा है। डॉ. ग्रियर्सन महोदय ने अपने 'भाषा-सर्वेक्षण' में ठीक ही कहा है कि "हिंदी का विकास प्रारंभ से ही अंतरभाषा के रूप में हुआ हैं" यह भाषा शतियों से समस्त भारत में थोड़ी-बहुत समझी तथा बोली जाती रही है। कहने की आवश्यकता नहीं कि सार्वदेशिक व्याप्ति के कारण ही इस भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाने का प्रस्ताव अहिंदी-भाषी प्रदेशों के नेताओं ने किया था।

सार्वदेशिक व्याप्ति के कारणों पर दृष्टिपात करें तो परिवार, समाज, व्यापार व लोक-व्यवहार का पक्ष इतना न मजबूत था कि हिंदी के अलावा दूसरी किसी भाषा की व्यापित गौण थी। लोक-व्यवहार, संस्कार-संस्कृति, धार्मिक, राजनैतिक व व्यापारिक-व्यवहार की आदान-प्रदान की भाषा हिंदी ही थी। दूसरी भाषाओं के शब्दों को भी आत्मसात् कर उसे व्यावहारिक बना देने की व्याप्ति में हिंदी सक्षम थी। बंगाली शिक्षविद् भूदेव मुखर्जी ने प्रशासन से टक्कर लेकर बिहार की कचहरियों में नागरी तथा कैथी लिपियों को प्रवेश दिलाया और 'आचार-प्रबंध'नामक अपनी पुस्तक में हिंदी को सभी भारतीय भाषाओं की एकता का साधन-सूत्र बतलाया। परिप्रेक्ष्य यह कि सभी भारतीय भाषाओं ने अपनी महत्ता के साथ हिन्दी की श्रीवृद्धि में अपना-अपना लोक प्रदान किया, जिससे हिन्दी ने समस्त भारतीय लोक की सम्पर्क-भाषा का सुंदर परिवेश निर्मित की। गांधी गुजराती भाषी थे परंतु उन्हें सभी भारतीय भाषाओं से अभिन्न लगाव था, यही कारण था कि उनके सभी अखबार बहुभाषिक प्रकाशित होते थे यथा इंडियन ओपिनियन, यंग इंडिया, नवजीवन, हरिजन.... वे जहाँ भी जाते वहाँ के लोक से, वहाँ की लोक भाषा से संपृक्त होते। अस्तु, गांधी की दृष्टि में भारतीय भाषाओं का अवगाहन करते हुए उसकी समष्टि भावना को समझना ही संगोष्ठी का उत्स है।

संगोष्ठी की प्रासंगिकता

'हिन्दुस्तानी' का पर्याय गाँधी का यह था कि लोक में बोली जाने वाली स्वाभाविक एवं बोधगम्य जीवित भाषा हिंदी, जिसकी जड़ें जनता में थीं और जिसका स्वरूप 'बहते नीर' की भांति निर्मल था। महात्मा गांधी ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के 1916 में हुये दीक्षांत समोराह में अपनी अभ्यर्थना दी थी कि "जिसे हिन्दी या हिन्दुस्तानी आती है, उसे मराठी, गुजराती, बांग्ला वगैरा सीखने में तकलीफ ही क्या हो सकती है? कन्नड़, तामिल, तेलुगु और मलयालम का भी मेरा तो यही तजुरबा है। इनमें भी संस्कृत के और संस्कृत से निकले हुए काफी शब्द भरे पड़े हैं। जब हममें अपनी मादरी जबान या मातृभाषा के लिए सच्ची मुहब्बत पैदा हो जाएगी, तो हम इन तमाम भाषाओं को बड़ी आसानी से सीख सकेंगे"। उनकी इस अभ्यर्थना का परिपोषण साहित्य के संदर्भ में राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर के वक्तव्य से समझा जा सकता है- "उपभाषाएँ उपेक्षणीय नहीं हैं। वे जनता के सांस्कृतिक जीवन से संबंध होने के कारण एक हद तक काफ़ी महिमामयी हैं। उनमें लोक-कथाएँ हैं, लोकगीत हैं, विलक्षण मुहाविरे और अनोखी कहावतें हैं, जिनके कारण हिन्दी की शक्ति और समृद्धि में वृद्धि हुई है। यह कितनी विलक्षण बात है कि हिन्दी का सारा प्राचीन साहित्य उसकी उपभाषाओं में है किन्तु, सभी उपभाषाएँ हिन्दी को अपना ही रूप मानती हैं। भाषा के क्षेत्र में यह शायद भारत की ही नहीं; सारे संसार की अतुलनीय घटना है"। कवि केदारनाथ सिंह का काव्य-संधान इस भारतीय भाषायी लोक को और समृद्ध करता है-

मेरी भाषा के लोग / मेरी सड़क के लोग हैं/सड़क के लोग सारी दुनिया के लोग/ कि मैं जब भी इसे बोलता हूँतो कहीं गहरे/अरबी, तुर्की, बांग्ला, तेलुगु/यहाँ तक कि हर पत्ती के/हिलने की आवाज भी /सब बोलता हूँ जरा-जरा/ जब बोलता हूँ हिन्दी!

उपरोक्त के संदर्भ में संगोष्ठी की प्रासंगिकता का पर्याय भाषायी भावात्मक एकता का माधुर्य है, जिसे गांधी ने अनुभूत किया था भारतीय भाषायी सांस्कृतिक संवेदना से....

मुख्य विषय : गाँधी और भारतीय भाषाएँ

उप-विषय

1. गांधीजी की दृष्टि में भारतीय भाषाएँ
2. गाँधी की भाषा-नीति
3. हिंदी, हिन्दुस्तानी और गाँधी
4. राष्ट्रभाषा हिन्दी और महात्मा गाँधी
5. हिन्दी, हिन्दुस्तानी, खड़ी बोली हिन्दी, अमीर खुसरो और गाँधी
6. भारतीय भाषाओं की एकता की कड़ी में हिन्दी
7. भारतीय भाषाएँ, देवनागरी लिपि और गाँधी
8. दक्षिण भारतीय भाषाएँ, हिन्दी और गाँधी
9. बंगाल, बांग्ला, हिन्दी नवजागरण और गाँधी
10. स्वतंत्रता संग्राम और भाषायी एकताकी पृष्ठभूमि में हिन्दी
11. अंग्रेजी, भारतीय भाषाएँ और गाँधी
12. पूर्वोत्तर की भाषाएँ, हिन्दी और गाँधी
13. बुनियादी शिक्षा और त्रिभाषा सूत्री-नीति
14. नयी शिक्षा नीति में भाषा का सवाल और गाँधीवादी अवधारणा
15. राजभाषा, राष्ट्रभाषा, हिन्दी और गाँधी
16. गाँधी और हिन्दी

- **संगोष्ठी शोध-पत्र प्राप्ति की अंतिम तिथि : 15 जनवरी, 2020**
- **संगोष्ठी-पत्र संप्रेषण हेतु ई-मेल : isgsnpmodi@gmail.com**
- **हिंदी में युनिकोड(KokilaFont 12) अंग्रेजी में Times New Roman(Font 12, Space 1.5 cm)**

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति का मूल उद्देश्य विभिन्न सामाजिक-शैक्षणिक कार्यक्रमों के माध्यम से महात्मा गांधी के जीवन ध्येय एवं विचारों का प्रचार-प्रसार करना। राजघाट पर स्थित गांधी दर्शन और तीस जनवरी मार्ग पर स्थित गांधी स्मृति का समायोजन करके सितम्बर, 1984 में गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति का गठन एक स्वायत्त निकाय के रूप में किया गया जो भारत सरकार के संस्कृति विभाग, पर्यटन और संस्कृति मंत्रालय के रचनात्मक परामर्श एवं वित्तिय समर्थन से कार्य कर रही है। भारत के प्रधानमंत्री इसके अध्यक्ष होते हैं और इसकी गतिविधियों का मार्ग निर्देशन करने के लिए वरिष्ठ गांधीवादियों और विभिन्न सरकारी विभागों का एक निकाय है।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविलय, वर्धा

मध्य भारत के सतपुड़ा रेंज की पहाडियों पर अवस्थित महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय गांधी के सपनों का भारत की तरह भारत के सपनों का विश्वविद्यालय है। महात्मा गांधी के सपनोंके भारत में एक सपना राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को प्रतिष्ठित करने का भी था। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के उद्गम से उद्गमित नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन (10-14 जनवरी, 1975) में यह प्रस्ताव पारित किया गया था कि संयुक्तराष्ट्र संघ में हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान दिया जाए तथा एक अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना की जाय जिसका मुख्यालय वर्धा में हो। यह संभव हुआ वर्ष 1997 में – जब भारत की संसद द्वारा एक अधिनियम पारित करके महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना वर्धा में हुई। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय अपने स्वरूप में एक अनूठा विश्वविद्यालय है। हिंदी के प्रचास्प्रसार के उद्देश्य से कार्यरत यह दुनिया में अकेला विश्वविद्यालय है जहाँ फ्रेंच,चीनी, स्पेनिश और जापानी जैसी विदेशी भाषाएं हिंदी माध्यम से पढ़ाई जाती हैं। 'ग्लोबलहिंदी' की राह पर यह मील का पत्थर है। विश्वविद्यालय की कार्य-संस्कृति, प्रशासन व कार्य-व्यवहार में गांधी के विचार मार्गदर्शन का कार्य करते हैं। ज्ञान-विज्ञान की एक संवाहक भाषा के रूप में हिंदी केंद्र-बिंदु बने, विश्वविद्यालय इस महत्वाकांक्षी योजना की सफलता हेतु कटिबध्द है।

गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग

गांधी एवं शांति अध्ययन सामाजिक विज्ञानों के अध्ययन के क्षेत्र में एक प्रभावशाली कदम है। यह विषय गांधी की अवधारणा और शांति से इसकी संबद्धता को व्यापक दायरे में समझने की एक दृष्टि देता है। अंतरानुशासनिक चरित्र का यह नैतिक-दृष्टि, सुशासन, विकेन्द्रीकरण, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं इसकी राजनीति के साथ-साथ भू-राजनीति एवं सतत विकास की शिक्षा को अपने में शामिल करता है। यह विषय विद्यार्थी को सतत विकास एवं शांति के साथ उसकी संबद्धता को शिक्षण, शोध एवं विस्तार के व्यापक कार्यक्रमों तक पहुँचाता है। गांधी एवं शांति के विभिन्नपहलुओं को व्यापक-दृष्टि से व्याख्यायित करने वाला यह पाठ्यक्रम न सिर्फ विद्यार्थियों के कौशल एवं क्षमता निर्माण में वृध्दि करता है, बल्कि उन्हें विकास एवं शांति के क्षेत्रमें आनेवाली समस्याओं और चुनौतियों को समाधान के लिये प्रेरित भी करता है। गांधी के मूल्यों एवं सिध्दांतों के प्रति गंभीर अध्ययन व शोध के साथ-साथ मानवता के लिए प्रतिबध्दता पैदा करने के उद्देश्य से यह पाठ्यक्रम सन् 2004 से संचालित किया गया है। अंतरानुशासनिक पध्दति से तैयार यह पाठ्यक्रम संपूर्ण मानविकी एवं समाज वैज्ञानिक अध्ययन का ऐसा सम्मिलित अध्ययन प्रस्तुत करता है, जो विभिन्न ज्ञानानुशासनों को देखने व समझने की नई दृष्टि देता है।

कार्यक्रम-विवरण

प्रथम दिवस : 23 जनवरी, 2020

गालिब सभागार, तुलसी भवन, साहित्य विद्यापीठ
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
जलपान एवं पंजीकरण: 9:00

उद्घाटन सत्र : प्रात: 10:00-12:00
चाय अंतराल : 12:00-12:15
प्रथम अकादमिक सत्र : 12:15-1:30
भोजन अवकाश : 1:30-2:30

द्वितीय अकादमिक सत्र : 2:30-4:00
चाय अंतराल: 4:00-4:15
तृतीय अकादमिक सत्र : 4:15-5:45
अल्पाहार एवं चाय : 5:45

द्वितीय दिवस : 24 जनवरी, 2020

गालिब सभागार, तुलसी भवन, साहित्य विद्यापीठ
जलपान : 8:30- 9:00
चतुर्थ अकादमिक सत्र : 9:15-10:15
चाय अंतराल : 10:15-10:30
पंचम अकादमिक सत्र : 10:30-11:45
चाय अंतराल : 11:45-12:00
षष्ठ अकादमिक सत्र : 12:00-01:30
भोजन अवकाश : 1:30-2:30
समापन सत्र : 2:30-4:30 बजे
अल्पाहार एवं चाय : 04:30

संरक्षक

प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल
कुलपति: म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा
श्री दीपंकर श्रीज्ञान
निदेशक : गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली

सह-संरक्षक

प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल, प्रतिकुलपति
प्रो. चंद्रकांत एस रागीट, प्रतिकुलपति

आयोजन समिति

संयोजक

प्रो. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी(मो. 9970251073)
अधिष्ठता: संस्कृति विद्यापीठ, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

समन्वयक

डॉ. राकेश कुमार मिश्र (मो. 9970251140)
डॉ. मनोज कुमार राय (मो. 9404822608)
डॉ. डी.एन.प्रसाद (मो. 9420063304)
डॉ. चित्रा माली (मो. 9422905721)

परामर्शदात्री समिति

प्रो. मनोज कुमार, अधिष्ठाता : शिक्षा विद्यापीठ
प्रो. प्रीति सागर, अधिष्ठाता : साहित्य विद्यापीठ
प्रो. कृपाशंकर चौबे, अधिष्ठाता : मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
प्रो. अवधेश कुमार शुक्ल, अधिष्ठता : छात्र कल्याण

आमंत्रण

गाँधी 150वीं के परिप्रेक्ष्य में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी

मुख्य विषय : गाँधी और भारतीय भाषाएँ

23-24 जनवरी, 2020

आयोजक

गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

एवं

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली

गांधी हिल्स, वर्धा - 442 001 (महाराष्ट्र)
दूरभाष: 07152- 230313 /मो. 9970251073
ई-मेल : isgsnpmodi@gmail.com
वेबसाइट : www.hindivishwa.org